दिव्य शुभाशीर्वाद

स्व. श्री नाथूलालजी मेहता

स्व. श्रीमती नजरदेवी मेहता

स्व. श्री मनोजजी मेहता

की पुण्य स्मृति में सादर समर्पित

शुभेच्छु :

दिलीप-दर्शना, श्रीमती दिप्ती, निलेश (कान्हा)-हेमलता (अंजू)
अनन्या, अक्षत, अर्णव, आर्विका एवं समस्त मेहता परिवार
सथाना बाजार, बिजयनगर (अजमेर)

प्रतिष्ठान :

- मेहता फैन्सी स्टोर, बिजयनगर
- नाकोड़ा ऑटो एण्ड फाइनेन्स, बिजयनगर
- मेहता प्रोपर्टीज, बिजयनगर

Mob. 9414297793, 9828587898

SOORYA BJNR.

॥ श्री प्राज्ञगुरवे नमः॥ ॥ श्री महावीराय नमः॥ ॥ श्री नानकसोहनसुदर्शनाचार्येभ्यो नमः॥

श्री प्राज्ञ मिर्गी रोग निवारक समिति
SHRI PRAGYA MIRGI ROG NIWARAK SAMITI

गुलाबपुरा-311 021 (राजस्थान) फोन: 01483-223969
Mob. : 9413823969 E-mail : pragyamirgi@gmail.com

स्थापित 1978

रविवार पूर्ण अवकाश
रविवार को दवाई वितरण बंद रहता है।

अस्पताल का समय : प्रातः 9 से सायं 3 बजे तक

मिर्गी मार्गदर्शिका एवं रोगी उपचार डायरी

अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	मंत्री
घेवरचंद श्रीश्रीमाल, गुलाबपुरा	मूलचंद नाबेड़ा, बिजयनगर	पदमचन्द खटोड़, अजमेर
मो. 9413880279	मो. 9829795227	मो. 9314390043
सहमंत्री	**व्यवस्थापक**	**कोषाध्यक्ष**
सुरेश लोढ़ा, गुलाबपुरा	चांदमल लोढ़ा, गुलाबपुरा	पारसमल बाबेल, अण्टाली
मो. 7742190355	मो. 9413823969	मो. 9950512415

मातृ संस्था : श्री नानक श्रावक समिति, बिजयनगर

दिव्य शुभाशीर्वाद

श्री शोभागमल बोहरा

स्व. श्रीमती अनोपकंवर बोहरा

सभी रोगी भाईयों के शीघ्र स्वस्थ होने की मंगलकामनाओं के साथ...

जय श्री फाईनेन्स

भटेवड़ा गली, बिजयनगर (अजमेर) राज.

शुभेच्छु :

चेतनसिंह, प्रेमराज, ललितकुमार
एवं समस्त बोहरा परिवार
(मसूदा वाले), बिजयनगर

दिव्य शुभाशीष

स्व. श्री गजमलजी बांठिया

स्व. श्री सोहनलालजी बांठिया

पावन प्रेरणा से

श्रीमती बरजकंवर बांठिया

सभी रोगी भाईयों के शीघ्र स्वस्थ होने की मंगलकामनाओं के साथ...

शान्तिलाल, पारसमल, नवरतनमल, अभिषेक, महावीर
चन्द्रप्रकाश, जितेन्द्र, लक्षित एवं समस्त बांठिया परिवार

प्रतिष्ठान :

● बांठिया फैब्रिक्स प्रा. लि., भीलवाड़ा ● श्री नाकोड़ा फाइनेन्स, भीलवाड़ा
● श्री नाकोड़ा फिनकोर्प, भीलवाड़ा ● पारस फाइनेन्स, अहमदाबाद
Mob. 9414115246, 9426178482

रजिस्ट्रेशन नं. 208/83-84 दिनांक 15.9.84

श्री प्राज्ञ मिर्गी रोग निवारक समिति

SHRI PRAGYA MIRGI ROG NIWARAK SAMITI

गुलाबपुरा-311021 (राजस्थान)

फोन : 01483-223969, मो. 09413823969

E-mail : pragyamirgi@gmail.com Website :pragyaepilepsycare.in

Fecebook id : shree pragyaepilepsy research center

रोगी परिचय

डायरी वितरण की तारीख एवं संख्या .....

रजिस्टेशन नम्बर ..... दिनांक ...../...../20.....

श्री/श्रीमती/कुमारी ..... जाति .....

पिता/पत्नी/पति का नाम .....

उम्र ..... वर्ष, पुरूष/स्त्री ..... वजन ..... किग्रा.

लम्बाई ..... शिक्षा ..... बी.पी.एल. .....

सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति : साधारण / मध्यम / उच्च

पता .....

.....

जिला ..... राज्य ..... पिन .....

मो. ..... आधार नं. .....

अतिमहत्वपूर्ण सूचना

रोगी या उसके परिवार का सदस्य जब दवा लेने आये, तब डायरी के पेज नं. 19-20 पर परिवार वाला दौरा आने या नहीं आने की जानकारी लिखवा कर लावें कि इस अवधि में दौरा कितनी बार आया या बिलकुल नहीं आया, इससे डॉक्टर को रोगी की दवाई कम/ज्यादा करने में मदद मिलेगी। आपके मरीज की स्वास्थ्य संबंधी जानकारी हमें कम्प्यूटर में रिकार्ड करनी पड़ती है।

दवाई लेने के लिए मूल डायरी लाना अतिआवश्यक है।

रोगियों व उनके परिजनों से विशेष निवेदन है कि आप इस डायरी को बार-बार पढ़ें और दिशा निर्देशानुसार चले तो रोगी जल्दी ही स्वस्थ होगा।

रोगी रजिस्ट्रेशन क्रमांक : .....

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं,
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ 1 ॥

एसो पंच णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढ़मं हवइ मंगलं ॥ 2 ॥

उपर्युक्त मंत्र पर श्रद्धा रखने से रोगी का आत्मबल एवं विश्वास बढ़ता है। कहावत है कि दवा के साथ दुआ भी काम करती है। अतः सभी से अनुरोध है कि इस नवकार मंत्र का नियमित रूप से उच्चारण कर पूर्ण श्रद्धा रखें।

शासन गौरव, युवा मनीषी, आगम मर्मज्ञ, निर्मल प्रज्ञा के धनी आचार्य प्रवर श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. की प्रेरणा से

यह डायरी मिर्गी रोगियों को समर्पित

यह डायरी मिर्गी रोगियों एवं उनके परिवारों की जानकारी के लिए बनाई गई है। प्रसिद्ध न्यूरोफिजिशियन डॉ. प्रताप संचेती जो हमारे अस्पताल के सलाहकार हैं। इस क्षेत्र में उनके लम्बे अनुभव के आधार पर ही यह डायरी बनाई गई है। अतः आप सभी से अनुरोध है कि इसमें लिखित जानकारी को रोगी के परिवार का प्रत्येक सदस्य व रोगी स्वयं अच्छी तरह से पढ़ें, समझें और उसका पूर्णतया पालन करें। डायरी में लिखी गई प्रत्येक बातों पर विशेष ध्यान देवें, रोगी को बार-बार सावधान करते रहें, दवा समय पर लेने व रोगी को स्वयं लेना सिखावें ताकि आपका रोगी जल्दी से जल्दी स्वस्थ हो जाए और सुखमय जीवन व्यतीत करे।

ऐसी हम आशा करते हैं....

जुलाई, 2022

घेवरचन्द श्रीश्रीमाल
अध्यक्ष
B.E. (Mining) FCMM

प्रस्तावना

Dr. R.K. Sureka
MD (Med.), DNB (Neurology)
Professor & Head, Department of Neurology
Mahatma Gandhi Medical College, Jaipur
Formerly Professor, Neurology
S.M.S. Medical College, Jaipur
Rajsthan State Award Winner
Guinness Book World Record Holder
Record Holder For Work On Epilepsy (Limca Book Record 2016)
E-Mail : rsureka@rediffmail.com, rsurekaneuro@gmail.com
Website : www.epilepsycrf.com, Mobile App. : "MIRGI SAMJHO"

श्री प्राज्ञ मिर्गी रोग निवारक समिति एवं अनुसंधान केन्द्र गुलाबपुरा के तत्वावधान में चलने वाली संस्था पिछले 44 वर्षों से मिर्गी रोग का निःशुल्क उपचार कर रही हैं। संस्था द्वारा श्री घेवरचन्द श्रीमाल अध्यक्ष उनकी टीम द्वारा मिर्गी रोगियों के लिये यह डायरी बनाई गई है जो कि रोगियों के लिये बहुत ही उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक सिद्ध होगी। मैं इस संस्था को एवं इसके संचालकों को बधाई देता हूँ कि इस संस्था द्वारा निःशुल्क दवाइयों के साथ यह डायरी भी हर एक मरीज को दी जाएगी।

इस डायरी में मरीज की बीमारी का पूर्ण विवरण, दवाइयों की सूची, दौरे का रिकार्ड आदि समुचित किये गये हैं। मैं आशा करता हूँ कि चिकित्सक को मिर्गी रोगियों के ईलाज में इस डायरी से काफी सहायता प्राप्त होगी एवं मिर्गी रोगी की देखभाल करने वाले प्रियजन इस डायरी को पढ़कर मिर्गी रोगी को उचित प्राथमिक उपचार एवं उचित ईलाज के लिए प्रेरित करेंगे।

निःशुल्क मिर्गी शिविर चलाने के मेरे लंबे अनुभव में मैंने यह देखा है कि इस केन्द्र में विशेषज्ञ चिकित्सकों की सेवा, संस्था एवं कार्यकारिणी के सदस्यों के इस बीमारी के मरीजों के प्रति समर्पण एवं निःस्वार्थ सेवा एवं इस डायरी द्वारा प्रसारित जानकारी के कारण मिर्गी रोगी का पूर्णतया ईलाज संभव हो सकेगा। इस अवसर पर मैं संस्था को अपने उद्देश्य में सफलता के लिये अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ। हाल ही में मरीजों के हितार्थ चालू की गई रोग के बारे में समझाईश, परामर्श एवं योग कार्यक्रम प्रशंसनीय एवं प्रगति के प्रतीक हैं।

मानवता की सेवा के लिए मैं एक बार पुनः नये प्रयास के लिए साधुवाद देता हूँ।

डॉ. (प्रो.) मनमोहन मेहंदीरत्ता
निर्देशक, प्रोफेसर और एचओडी, न्यूरोलॉजी विभाग
अध्यक्ष–भारतीय मिर्गी एसोसिएशन
जनकपुरी अतिविशिष्ट चिकित्सालय
सी–2 बी, जनकपुरी, नई दिल्ली – 110058

श्री घेवरचन्द श्रीश्रीमाल
अध्यक्ष, प्राज्ञ मिर्गी रोग अस्पताल, गुलाबपुरा

आप व पी.सी. जैन साहब मुझसे 5 साल पहले मिले तब से मैं आपकी संस्था को पहचानता हूँ। इस बार आपने जो हमारे वार्षिक अधिवेशन में तारीख 10 मार्च 2019 को प्रस्तुतीकरण दिया, उसे संगठन के सभी सदस्यों ने बहुत पसंद किया और आप जो मिर्गी रोगियों की सेवा का कार्य कर रहे हैं उसकी सबने प्रशंसा की एवं प्रसन्नता जाहिर की है।

यह डायरी जो आपने मिर्गी रोगियों के लिए बनाई है बहुत ही अच्छी है। मैं सभी रोगी भाईयों से निवेदन करूँगा कि आप इसका पूर्णतया पालन करें। आप जो कैम्प से काउंसलिंग व योगाभ्यास करवा रहे हैं, वह भी बहुत अच्छा है। इससे मुझे पूर्ण विश्वास है कि रोगी जल्दी स्वस्थ होगा। ऐसी सुविधाएं बहुत कम जगह पर देखने को मिलती है। अतः रोगी भाई इसका पूरा-पूरा लाभ उठाएंगे, ऐसी मैं आशा करता हूँ।

Epilepsy Association Of India

(अखिल भारतीय मिरगी संगठन की राष्ट्रीय पत्रिका)

Epilepsy India में Jan. to March, 2017 के संस्करण में मिरगी हॉस्पीटल, गुलाबपुरा के बारे में अपने सम्पादकीय में निम्न टिप्पणी की

"A Most Heartening information is the running of Sri Pragya Mirgi Rog Hospital in Gulabpura in Bhilwara, Rajasthan. This Hospital established in 1978 caters to a large population of epilepsy patients in an extremely remote area. The Jain Society which runs this Hospital has been doing a fabulous charitable work over many decades. Dr. Satish Jain recently visited the place and was fuisome in his praise. Dr. Sanchetee And Dr. Surekha who are the driving forces deserve kudos from one and all."

G.C. Shree shreeMal, President

Dr. Vikram Bohra

MBBS, MD, DM, Neurology, FINS
Neurointerventional
Observership, Mount Sinai, New York, USA
Senior Consultant Neurologist & Chief Interventional
Neurologist, Rajasthan Hospital (RHL), Jaipur
Medinova super speciality clinic, Shyam Nagar, Jaipur

श्री प्राज्ञ मिर्गी रोग निवारण संस्थान चिकित्सा के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व प्रयोग है। मुझे उनके द्वारा प्रकाशित डायरी अत्यधिक आवश्यक महसूस हुई। मस्तिष्क रोग की कई बीमारियां लम्बी अवधि तक चलती है तथा उनका समय अनुसार लेखा-जोखा रखने से न केवल मरीज को अपनी बीमारी के कण्ट्रोल का पता लगता है बल्कि इलाज कर रहे डॉक्टर को भी उतनी ही मदद मिलती है।

मिर्गी रोग के बारे में समाज में कई भ्रांतियाँ है। ये डायरी उन भ्रांतियों को दूर करने हेतु एक अनूठा प्रयास साबित होगी। मिर्गी रोग के इलाज में दवा के साथ-साथ दैनिक आचरण में नियमित्ता बरतनी होती है। ये डायरी मरीज को उन सभी अव्यवस्थाओं के बारे में जरूरी जानकारी देती है।

मैं उम्मीद करता हूँ कि श्री प्राज्ञ मिर्गी रोग निवारण संस्थान भविष्य में भी इसी प्रकार कार्यान्वित रहेगा तथा नए आयाम छुएगा।

Dr. Rajendra Chandak

MBBS, MD (Medician)
Seniour Physician
Manav Seva Sansthan
Gulabpura-311021 (Raj.)

श्री प्राज्ञ मिर्गी रोग निवारक संस्था मिर्गी के रोगियों के लिए एक वरदान है। रोगियों को दी जा रही डायरी में काफी अच्छी जानकारी दी गई है जिससे रोगी को अपने रोग के बारे में काफी ज्ञानवर्द्धक बातें मिलती है, इसमें जीवन यापन के तरीके बताए गए हैं जो काफी लाभप्रद हैं।

यहाँ से ईलाज करा रहे रोगी 80 प्रतिशत तक सन्तुष्ट हैं, ठीक हो रहे हैं, यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है क्योंकि मैं इस संस्था में 35 वर्षों से मरीजों को देख रहा हूँ जो मिर्गी रोगी यहाँ से ईलाज कराने आता है उसे अन्यत्र भटकना नहीं पड़ता, यह एक गुरुदेवों की कृपा भी है।

इस डायरी से आपको क्या लाभ?

1. दौरे के समय की घटनाओं का रिकॉर्ड रखने पर आप तकलीफ सम्बन्धी कोई घटनाक्रम नहीं भूलेंगे।
2. घटनाओं के रिकॉर्ड से आपके डॉक्टर को उपचार में प्रगति के बारे में जानकारी मिलेगी।
3. इलाज व दवा से आप कोई साइड इफेक्ट महसूस कर रहे हो तो उसके प्रकार व प्रभाव पेज नं. 18 देखकर पेज नं. 19/20 में भरें जिससे डॉक्टर को इलाज करने में मदद मिलेगी।
4. आपके लिए सही दवा का निर्णय लेने में आपके डॉक्टर को मदद मिलती है।
5. जब दौरा आए, अपने दौरे की किस्म और दिनांक व समय लिखें।
6. डायरी के पढ़ने से मिर्गी रोग क्या है? इसके लक्षण क्या है? क्या निदान है? सावधानियां क्या रखनी है? की पूर्ण जानकारी रोगी व उसके परिवार को मिलेगी, जिससे रोगी के उपचार व शीघ्र स्वस्थ होने में मदद मिलेगी।
7. डायरी में दर्शाई गई बातों को पढ़ने से इस रोग के बारे में समाज के सामान्य सदस्यों को भी मिर्गी रोग के बारे में जानकारी बढ़ेगी। मिर्गी रोग के बारे में जागरूकता बढ़ेगी। मिर्गी से संबंधित फैली भ्रांतियां भी समाप्त होगी। इलाज के लिए प्रेरित होंगे।

✿✿✿

कृपया ध्यान दें :-

मिर्गी रोगी के इलाज, दवा बाबत् केम्प में विशेषज्ञ डॉक्टर के कब आने बाबत्, चिकित्सालय में अवकाश बाबत् या अन्य कोई भी जानकारी लेनी हो तो यथा सम्भव कार्यालय समय प्रातः 9 बजे से सांय 3 बजे तक ही व्यवस्थापक से फोन/मोबाइल पर बात करें, जिससे सही जानकारी मिल सकेगी। असमय पर किसी भी पदाधिकारी को छोटी-छोटी जानकारी के लिए फोन करने से बचें।

श्री प्राज्ञ मिर्गी रोग निवारक समिति एवं अनुसंधान केन्द्र

SHRI PRAGYA EPILEPSY & RESEARCH CENTER

गुलाबपुरा-311021 (राजस्थान) फोन 01483-223969

GULABPURA (Rajasthan) Mob. : 9413823969

संक्षिप्त परिचय

नानकवंशीय पूज्य प्रर्वतक गुरुदेव श्री पन्नालालजी म.सा. की पावन स्मृति में पूज्य प्रवर्तक श्री कुन्दनमलजी म.सा. की प्रेरणा से स्थापित आचार्य प्रवर गुरुदेव श्री सोहनलालजी म.सा. एवं शासन गौरव, युवामनीषी, प्रज्ञामूर्ति, आगम मर्मज्ञ आचार्य प्रवर श्री सुदर्शनलालजी म.सा. के शुभाशीर्वाद से गत 44 वर्षों से मिरगी रोग का निःशुल्क उपचार भारत के विभिन्न राज्य जैसेः मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, बिहार व अन्य राज्यों तथा विदेश में गए हुए रोगी अपना ईलाज करवा रहे हैं। हर माह लगभग 2500 रोगी निःशुल्क दवाई प्राप्त कर रहे हैं जो कि भारतवर्ष के 65 जिलों एवं 10-12 राज्यों से आते हैं। हर वर्ष लगभग 2000 नये रोगी इस चिकित्सालय से जुड़ते हैं। जिनमें से लगभग 95 प्रतिशत गरीब वर्ग के ग्रामीण रोगी हैं जो धन के अभाव में दूसरी जगह उपचार नहीं करा पाते हैं। यह अस्पताल इन परिवारों के लिए पूर्ण समर्पित है। सभी रोगी यहां के ईलाज से पूर्ण संतुष्ट हैं। **यह अस्पताल गुलाबपुरा तहसील हुरड़ा जिला भीलवाड़ा, राजस्थान में स्थापित है।** जिसकी जनसंख्या लगभग 25000 है। यह नेशनल हाइवे एनएच-79 अजमेर-भीलवाड़ा के मध्य में स्थित है। अजमेर से 70 किलोमीटर एवं भीलवाड़ा से 65 किलोमीटर है। यह अजमेर-रतलाम रेल मार्ग पर गुलाबपुरा रेलवे स्टेशन पर स्थित है।

इस संस्था का अपना पूर्ण सुविधायुक्त भवन है। अस्पताल संचालन हेतु सात कमरे एवं पर्याप्त कर्मचारी है। जाँच के लिए EEG Machine भी है। डॉक्टर के बैठने के लिए तीन बड़े कमरे हैं। कर्मचारी पूर्ण समर्पण भाव से रोगियों की समस्याओं को हल करने में पूरी मदद करते हैं। **यह संस्था दानदाताओं के सहयोग से चल रही है। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि दानदाताओं के सहयोग से यह संस्था अपने नये आयामों को छू रही है और भारत वर्ष में अपनी अलग पहचान बना चुकी है।**

रोगियों में जागरूकता बढ़ाने के लिए LED TV भी लगाया गया है। मिरगी संबंधित फिल्में दिखाई जाती है। Vedio CD's भी है जो मरीजों को सुनाई जाती है। इससे मरीजों में जागृति आई है। फ्लेक्स भी लगाए गए हैं जिनसे समय-समय पर नई जानकारी जो प्राप्त होती है प्रतिदिन मरीजों को काउंसलिंग भी कराई जाती है। ***रात्रि विश्राम हेतु व्यवस्था है।***

अस्पताल की व्यवस्था संबंधी जानकारी

1. मिर्गी संबंधित सारे ईलाज एवं जाँच की सुविधाएं उपलब्ध है।
2. सभी रोगियों का रिकॉर्ड कम्प्यूटराईज्ड कर दिया गया है।
3. प्राज्ञ मिरगी रोग समिति गुलाबपुरा को अखिल भारतीय मिर्गी संगठन (**Indian Epilepsy Association**) की सदस्यता ग्रहण की जा चुकी है। जिससे **Epilepsy India** अखिल भारतीय पत्रिका में समय-समय पर इस अस्पताल की गतिविधियों के समाचार भी आते हैं।
4. **रोगियों को सलाह दी जाती है कि अपना रजिस्ट्रशन नम्बर, मोबाइल में या निजी डायरी में अपने पास/घर पर रखें जिससे कि डायरी खो जाने पर डुप्लीकेट डायरी बनाई जा सके। किसी भी कारणवश पुराने रोगी डॉक्टर की नई पर्ची बनवाकर नए रजिस्ट्रेशन नम्बर से कोई भी रोगी दवा लेता पाया गया तो भविष्य के लिए दवा देना असंभव होगा।**
5. रोगी या उसके परिवार वाले दवा लेने आए तो डायरी अवश्य साथ में लावें, तभी दवा दी जाएगी। **डायरी को नहीं मोड़ें व पूर्ण सुरक्षित रखें** क्योंकि इसका उपयोग लम्बे समय तक रहेगा।
6. नए रोगियों के लिए गुलाबपुरा में मिर्गी रोग से संबंधित रिटायर्ड एवं राजकीय अस्पताल में कार्यरत डॉक्टर उपलब्ध हैं जिन्हें मिर्गी रोगी को दिखाया जाकर दवा पर्ची बनाई जा सकती है। जिस पर इस संस्था में रजिस्ट्रेशन करवा कर दवा देना प्रारम्भ कर दिया जाएगा।
7. रोगी को नियमानुसार 1 एक माह की दवा ही निःशुल्क दी जाती है। रोगी को 3 माह में डॉक्टर को अवश्य दिखाऐं। हर बार डॉक्टर के लिखने पर ही दवा आगे के लिए दी जाती है। अतः परिवार का व्यक्ति जो दवा लेने के लिए आए, रोगी को साथ में लेकर आए, दौरों की स्थिति कम्प्यूटर में दर्ज कराए और डॉक्टर को भी बताएं।
8. आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80जी के अन्तर्गत कार्यालय आयकर आयुक्त अजमेर के आदेशानुसार अनुदानित संस्थाओं को 1.10.2009 के पश्चात् जो भी आर्थिक सहयोग दान स्वरूप दी जायेगी वह 80जी के तहत आयकर से मुक्त है। आयकर **Pan No. AABAP4017A** अतः सभी दानदाताओं से निवेदन है कि विशेष अवसरों पर जैसे-शादी, जन्मोत्सव, तपस्याएं, मुण्डन संस्कार, पुण्यतिथि आदि अन्य अवसरों पर **आर्थिक सहयोग प्रदान कर पुण्य के सहभागी बनें। इस संस्था के**

बैंक खाते निम्न है:- (1) SBI बैंक 38411214891 IFSC-Code SBIN51091 (2) ICICI बैंक 667405008501 IFSC-Code ICIC 0006674 (3) बैंक ऑफ बड़ौदा A/c No. 10220100012111 IFSC Code - BARBO GULABP खाते का नाम - **प्राज्ञ मिरगी रोग निवारक समिति, गुलाबपुरा**

9. मरीजों के लिए मासिक कैम्प भी लगाए जा रहे हैं। व्यवस्थापक से इस बारे में दवाई लेते समय जानकारी ले लेवें एवं सूचना पट्ट पर देख लेवें। डॉक्टर प्रत्येक मरीज को देखकर उपचार करते हैं। **रोगी/परिवार जन केम्प में आने से पूर्व कार्यालय फोन पर पूर्व जानकारी ले लें (केम्प में 12.30 बजे तक आने वाले रोगियों को देखा जाता है)।**

मिर्गी रोग क्या है?

मस्तिष्क में लाखों छोटी-छोटी दिमागी कोशिकाऐं होती है, इन कोशिकाओं में विद्युत तरंगों का संचार होता है। विद्युत तरंगों के अत्यधिक मात्रा में आने से शरीर में होने वाले गति, संवेदी व मानसिक परिवर्तनों को मिर्गी का दौरा (**Epileptic Seizure or "Fit"**) कहते हैं। जब यह दौरा बार-बार होता है तो उसे मिर्गी रोग (**Epilepsy**) कहते हैं। कभी-कभी मिर्गी के दौरे जल्दी-जल्दी आते हैं तथा काफी समय तक मरीज होश में नहीं आ पाता है, इसे **Status Epileptics** कहते हैं।

मिर्गी रोग अन्य रोगों की तरह एक सामान्य रोग है। **देवी-देवता, भूत-प्रेत, जादू-टोना आदि से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।** यह मस्तिष्क के उन रोगों में से है जिससे काफी लोग प्रभावित रहते हैं फिर भी अधिकांश लोगों को इसकी जानकारी नहीं होती। ग्रामीण क्षेत्रों में मिर्गी के दौरे के समय चप्पल सुंघाई जाती है। सर्वेक्षण से पता लगा है कि सामान्य आबादी में 200 में से एक व्यक्ति को मिर्गी रोग पाया जाता है तथा भारत के लगभग एक करोड़ लोग मिर्गी रोग से ग्रसित है। इतिहास बताता है ज्यूलियस, सिजर, नेपोलियन बोनापार्ट, लीयाटोलिस्टोप, अल्फ्रेह नोवल, एलेक्जेंडर दी ग्रेट, प्रसिद्ध क्रिकेटर जोन्टी रोड्स, टोनी ग्रेग जैसे कई महान व्यक्ति भी मिर्गी रोग के मरीज थे।

मिर्गी आने के कारण

मिर्गी आने के कई कारण होते हैं। मनुष्य के जीवन में कुछ न कुछ घटनाएं होती रहती है। कभी-कभी ये घटनाएं भी मिर्गी का कारण बन जाती है। जैसे किसी दुर्घटना में मस्तिष्क में गम्भीर चोट पहुंचना, खेलते समय सिर के बल ऊंचाई से गिरना, तेज बुखार आना,

मस्तिष्क ज्वर, मस्तिष्क में रक्त नलियों की विकृति, मदिरा का अत्यधिक सेवन, कृषि के लार्वा द्वारा मस्तिष्क का संक्रमण, रक्त में सोडियम, कैल्शियम व शर्करा की असामान्यता के कारण भी दौरे की संभावना बढ़ जाती है।

सामान्य तौर पर नवजात शिशुओं में जन्म के समय प्रसव पीड़ा में जटिलताएं होने के कारण, दिमाग में पक्षाघात होने पर मिर्गी के दौरे आने लगते हैं।

मस्तिष्क के केन्द्रीय स्नायु तंत्र में किसी प्रकार की गठान या संक्रमण होने के कारण दौरे आने की संभावनाएं बढ़ जाती है।

मस्तिष्क में कोई बीमारी जैसे न्यूरोसिस्टिसरकोसिस या बेक्टीरियल मेनिन जाइटिस एवं सेरिब्रल मलेरिया के कारण भी मिर्गी के दौरे आते हैं, जिसका
निदान व्यक्तिगत रूप से चिकित्सक के साथ विचार-विमर्श एवं इलाज करने से संभव है।

मिर्गी के लक्षण

मांसपेशियों का अचानक जकड़ना, शरीर का लड़खड़ाने लगना अर्थात् संतुलन खो देना, शरीर जकड़ जाना, चेहरे की मांसपेशियाँ खिंच जाना, आँखों के आगे अन्धेरा छाना, बेहोश होना, मुंह से झाग आना, होठ या जीभ काट लेना, आंखें ऊपर की ओर पुतलियां खिंचना, बेहोशी आकर अचानक गिर जाना, दिमागी संतुलन पूरी तरह बिगड़ जाना, कभी इसका प्रभाव शरीर के एक हिस्से पर देखने को मिलना, कमजोरी आ जाना, स्मृति का कुछ समय के लिए लोप हो जाना, तेज रोशनी या झिलमिलाती रोशनी से परेशानी होना आदि इसी रोग के लक्षण है। ऐसी हालत में शीघ्र डॉक्टर से सम्पर्क करें, इलाज हेतु यहाँ गुलाबपुरा आकर डॉक्टर को दिखाकर हर एक माह की निःशुल्क दवा ली जा सकती है।

मिर्गी के दौरे खासतौर से स्कूल के बच्चें में कई प्रकार के होते हैं, जैसे-

1. पलक झपकते हुए कुछ समय के लिए होश खो देना।
2. इधर-उधर भटकना।
3. पेट में थोड़ी देर के लिए अजीब सा महसूस होना।
4. अपने कपड़ों को छूते रहना।
5. होठों को चाटते रहना।

6. शरीर से अकड़ना फिर जोर से हिलना या कांपना।
7. बच्चों को खुली जगह पर एवं छत पर अकेले नहीं खेलने दें।
8. छोटे बच्चों में छः माह से छः वर्ष तक के दौरान तेज ज्वर (बुखार) से मिर्गी के दौरे आ सकते हैं।

मिर्गी रोगी का दौरा पड़ने पर प्राथमिक उपचार

1. रोगी को आराम से बिस्तर पर लिटा दे, कपड़े ढीले कर दे, चश्मा हटा दे, बटन खोल दे, दौरे के बाद करवट ले लिटा दें, जिससे मुंह की लार आदि बाहर निकल सके और सांस की नली में नहीं जाये।
2. दौरे के समय मुंह में पानी डालने, दवा खिलाने का प्रयास नहीं करे, यह चीजें श्वास नली में जाकर अवरोध उत्पन्न करती है।
3. भिचे हुए जबड़े को बलपूर्वक खोलने का प्रयास नहीं करे, चम्मच आदि को दांतों के बीच नहीं फंसाये। जूता, प्याज या अन्य कोई तीव्र गंध सुंगाने का प्रयत्न न करें।
4. व्यक्ति को दूसरे स्थान पर न ले जाएं।
5. रोगी को पकड़कर अनावश्यक नियंत्रित न करें जब तक कि उस जगह कोई खतरा न हो।
6. व्यक्ति को चिल्लाकर उठाए नहीं व जोर से हिलाएं-ढुलाएं नहीं। व्यक्ति के पास भीड़ नहीं आने दें एवं दौरे के बाद रोगी से शांति से बात करें। आपको यह ध्यान रखना चाहिए कि अधिकांश दौरे जीवन के लिए घातक नहीं होते हैं।
7. सामान्यतया दौरा 2 से 4 मिनट में समाप्त हो जाता है। परन्तु कभी-कभी अधिक समय तक दौरा चलता है ऐसी स्थिति में अपने चिकित्सक से तुरन्त सम्पर्क करे।

चिकित्सकीय जाँच

डॉक्टर मिर्गी रोगी के दौरे का विस्तृत विवरण जानना चाहते हैं जो एक प्रत्यक्षदर्शी ही दे सकता है। दौरा किन परिस्थितियों में हुआ, रोगी को अन्य क्या परेशानियाँ है, वह और कोई दवा का सेवन कर रहा है, क्या जन्म के समय कोई परेशानी हुई थी, उसका शारीरिक व मानसिक विकास कैसा रहा है। क्या कभी रोगी को सिर में चोट लगी थी या मस्तिष्क ज्वर हुआ था, क्या परिवार में अन्य किसी व्यक्ति को इस प्रकार की बीमारी है। यह सब जानकारी आवश्यक होती है। डॉक्टर द्वारा जरुरी समझने पर खून की जाँच जैसे ब्लड शूगर, यूरिया, इलेक्ट्रोलाइट्स, कैल्शियम व छाती का एक्स-रे आदि परीक्षण कराये जाते हैं।

इसके अतिरिक्त ई.सी.जी. (इसी अस्पताल में उपलब्ध है), विशेष रोगी को सी.टी. स्केन के लिए सलाह दी जाती है, जो कि बिजयनगर पी.के.वी. चिकित्सालय में उपलब्ध है।

चिकित्सा

मिर्गी रोग में नियमित रूप से दवा लेने से पूर्णतया काबू पाया जा सकता है। **नियमित दवा खाना अति आवश्यक है।** दवा की एक खुराक ना लेने से पुनः दौरा आ सकता है और यह भी संभव है कि दौरा अधिक भयंकर हो या कई बार आ जाये। एक सीमित अवधि तक दौरे न आने पर औषधियों को धीरे-धीरे बन्द किया जाता है। यह अवधि सामान्यतया दो से तीन वर्ष होती है। पर्याप्त औषधि लेते हुए मिर्गी का रोगी एक अन्य सामान्य व्यक्ति की तरह जीवन यापन कर सकता है। यह रोग संक्रात्मक नहीं है तथा अनुवांशिक भी नहीं है। इसलिये यह जरूरी नहीं कि भविष्य में रोगी की संतान को भी यह रोग हो।

1. रोगी को दिन में नियमित रूप से ध्यान रखने वाली आवश्यक जानकारी

- निर्धारित समय पर दवा लेना, भूल जाने पर भी जब याद आए तब दवा ले लें परन्तु अगली दवा का अंतराल 4 घंटे से कम ना हो।
- मिर्गी के दौरों और इनकी बारंबारिता (संख्या) की सही जानकारी दर्ज करें।
- अकेले तैराकी के लिए जाते समय किसी को अवश्य बताएं। हो सके तो किसी को अपने साथ ले जाएं। दौरा लम्बे समय तक नहीं आने पर ही तैराकी करें।
- यदि आप गर्भ निरोधक गोली या अन्य कोई दवा ले रहे हों तो अपने डॉक्टर को अवश्य बताएं। प्रिग्नेन्सी होने पर डॉ. को बताएं, जिससे डॉक्टर दवा बदले, कम करे, विटामिन आदि दवा लिखें।
- नियम से दवाई ! कभी भूलना नहीं ! समय से लेना ! पूरी खुराक लेना !
- समय पर भोजन ! भूखे न रहे ! उपवास न करें !
- समय से नींद ! पूरी नींद ! जागरण न करें ! नींद प्रतिदिन 7-8 घंटा लेनी चाहिए। रात्रि में भी दिमाग के सेल आपस में काम करते हैं और दो सेलों की बीच के सफाई का काम करते हैं। नींद पूरी नहीं होने पर दौरा आने की संभावना बढ़ जाती है। किसी भी काम की वजह से देर रात नहीं जगना चाहिए।
- नशा न करें ! शराब, सिगरेट, बीड़ी, तम्बाकू और गुटखा का सेवन न करें। मीट, अण्डा भी नहीं खावें।
- खाली न बैठें ! काम करें ! व्यस्त रहें !

- बहुत ज्यादा थकान व तनाव से बचें!

3. सावधानियाँ :-

१. स्वयं दवा की खुराक कम न करें। दौरा 6 माह, 1 वर्ष, $1^1/_2$ वर्ष तक बिल्कुल नहीं आने पर भी स्वयं दवा लेना बंद न करें। डॉक्टर को स्थिति बताएं, डॉक्टर दवा धीरे-धीरे मात्रा कम करेंगे। स्वयं दवा बंद करना बीमारी को पुनः बुलावा देना है।

2. यदि दवा से कोई परेशानी हो तो चिकित्सक से सम्पर्क करें।

3. अपने पास सदैव दवाइयों का स्टॉक पूरा रखे। दो-चार दिन दवा न लेने पर पुनः दौरा आने पर लम्बा उपचार लेना पड़ेगा।

4. पीने की दवा की शीशी को पहले ठीक से हिला लेना चाहिए।

5. ज्यादा नजदीक से या लम्बे समय तक टेलीविजन ना देखें। जब प्रसारण सही नहीं आ रहा हो तो टीवी ना देखे। बीच-बीच में उठकर दूसरी जगह बैठें। छोटे पर्दे पर देखना ज्यादा ठीक है। बहुत ज्यादा थकान के कामों से बचें व अधिक तनाव व भयभीत होने से बचें।

6. सामान्य खान-पान, खेलने-कूदने, लिखने-पढ़ने में किसी प्रकार की रोक-टोक नहीं है।

7. भोजन में अनियमितता (समय पर न लेना) से शर्करा (**Suger Level**) का स्तर कम हो सकता है। भोजन अधिक करने पर अपाचन, अजीर्ण हो सकता है इससे भी दौरों में वृद्धि हो सकती है।

8. तेज रोशनी की चमक जैसे तेज चिलमिलाती रोशनी, वीडियो गेम (ज्यादा दूरी से), आकाशीय बिजली की चमक की तरफ या इस तरह के रोशनी की ओर नहीं देखना।

इन गतिविधियों से बचें :-

9. समुद्र, नदी या तालाब में अकेले तैरना, बाथरूम में जाने से पहले रोगी घर के अन्य सदस्य को कहकर जावे एवं दरवाजे की अन्दर की कुंदी नहीं लगावें। फव्वारे के नीचे नहाना ज्यादा सुरक्षित है।

10. दवाई लेने का समय याद रखने के लिए मोबाइल या घड़ी में दवा के समय का अलार्म भर देवें। जिससे दवाई लेने का समय नियमित रूप से याद रहे।

11. यह याद रखना चाहिए कि दौरे में व्यक्ति को दर्द नहीं के बराबर होता है। ज्यादातर दौरे थोड़ी देर के लिए ही होते हैं और अपने आप बंद हो जाते हैं। इसलिए जिसको दौरा पड़ रहा हो उसको सुरक्षित रखिए और दिलासा दीजिए। प्रत्यक्षदर्शी को घबराना नहीं चाहिए।

12. ऊंचे स्थानों पर जैसे पहाड़ों पर चढ़ाई न करें।

13. लम्बे समय तक कम्प्यूटर, इलेक्ट्रिक उपकरणों पर गेम न खेलें।

14. बाथ टब में तथा ज्यादा गरम पानी से नहीं नहाना चाहिए। अधिक गरम पानी से नहाने से भी दौरा आ सकती है।

15. खुली आग में या अकेले भोजन बनाना।

फिनीटोइन, कार्बेमेजिपीन, सोडियम वेलप्रोऐट तथा फिनाबार्बीटोन आदि मिर्गी रोग में प्रयोग में लाई जाने वाली मुख्य दवाये हैं। यहाँ सामान्यतया इन दवाओं से ही रोग पर काबू करने का प्रयास किया जाता है। इन दवाओं से कभी-कभी किसी को असामान्य प्रभाव हो सकते हैं, जैसे मसूड़ों में सूजन, बाल झड़ना, वजन बढ़ना आदि हो सकते हैं। ऐसा होने पर डॉक्टर को दिखाएं।

इस बीमारी की ऐसी प्रवृति है कि नियमित रूप से दवा लेने पर भी कभी दौरा आ जाता है, अतः आप घबराये नहीं।

16. रोगी स्वयं ट्रेक्टर, मोटरसाईकिल, कार आदि न चलाएं। करीब 3 माह तक लगातार दौरा नहीं आने पर तथा शारीरिक स्थिति अच्छी होने पर चला सकता है अन्यथा पीछे बैठे, ड्राइव करने वाले को पकड़कर रखें, हेल्मेट लगाए, दौरा आने पर गिर सकता है, गम्भीर चोट भी लग सकती है।

दवा लेने पर भी दौरे आने की संभावना बढ़ने के कारण :-

1) दवा की एक खुराक भूल जाना या कम मात्रा में दवा लेना।
2) तेज बुखार आ जाना। सर्दी व खांसी आना।
3) रात में कम सोना या अधिक रात तक जागना। शादी व अन्य समारोह के अवसरों पर झिलमिलाती रोशनी से बचें।
4) नशीले पदार्थों का प्रयोग या मद्यपान।
5) दवाई समाप्त हो जाना, पैसे की तंगी होना, यात्रा के समय औषधि साथ न रखना, समय से न लेना, पूरी खुराक न लेना।
6) तनाव।
7) Caffqine लेना।
8) सिर में चोट लगना।
9) खून में Glucose की मात्रा कम हो जाना।
10) मासिक समय।

दौरे की पूर्वावस्था का अवलोकन :-

1. दौरे के पूर्व व्यक्ति कहाँ था तथा क्या कर रहा था?
2. मरीज की मानसिक स्थिति कैसी थी? क्या वह अशांत या चिंतित था, उद्वेलित था?

3. क्या दौरे आने के पीछे कोई कारण था? जैसे थकान, नींद की कमी, खाली पेट या बुखार।
4. दौरे के पहले पूर्वाभास महसूस हुआ या नहीं? जैसे गंदगी बू, अलग प्रकार की असामान्य गंध या असामान्य स्वाद महसूस होना।
5. आपने दौरा कैसे पहचाना जोर से चीख की आवाज या गिरने की आवाज या आँखों को फेरना।
6. क्या वह शून्य में देख रहा था? टकटकी लगाकर देख रहा था, क्या उसकी चेतना खो गई थी या अव्यवस्थित थी।
7. क्या वह कुछ देर के लिए असामान्य व्यवहार कर रहा था? जैसे- पैर से तबला बजाना, कपड़ों को खींचना, चेहरे के रंग में परिवर्तन, पलकों को बार-बार झपकाना आदि।
8. डर या चिंता, मतली या उबकाई आना।
9. चक्कर आना।
10. दृष्टि संबंधी लक्षण जैसे आंखों के सामने तेज रोशनी, धब्बे दिखाई देना या डांवाडोल होना।

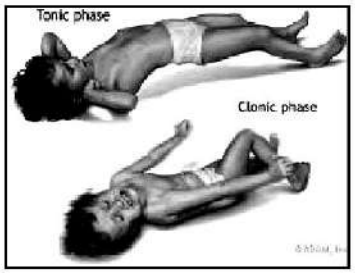

दौरे आने के दौरान :-

1. क्या उसके श्वास लेने में परिवर्तन था?
2. क्या शरीर के किसी हिस्से में कम्पन्न, ऐंठन या ढीलापन था?
3. जमीन पर गिरने पर उसके शरीर में ऐंठन थी या ढीलापन था?
4. क्या उसकी जबान या गाल दांतों से कट गए थे?
5. क्या उसने कपड़े गीले किये?
6. दौरा कितने समय के लिए था?

मिर्गी रोग और विवाह

मिर्गी के रोगी को विवाह करने की कोई मनाई नहीं है, किन्तु कार्यक्रम दिन में ही सम्पन्न करें अन्यथा शादी में रात्री में देर तक जागरण से दौरा आ सकता है। विवाह से पूर्व चिकित्सक की सलाह के अनुसार दवा नियमित रूप से चलती रहनी चाहिए। यदि संभव हो तो दवा का कोर्स पूरा होने पर ही गर्भधारण करना चाहिए। यदि ऐसा संभव नहीं है तो गर्भ ठहरने पर भी दवायें नियमित चलनी चाहिए। कभी-कभी बच्चे के हित में मिर्गी की दवाओं में परिवर्तन किया जाता है। इन दवाओं का गर्भस्थ शिशु पर कुप्रभाव हो सकता है।

परन्तु दवा न लेने पर दौरा आने पर होने वाले नुकसान की तुलना में काफी कम है क्योंकि दौरे में गर्भपात भी हो सकता है। प्रसव के बाद माँ अपने बच्चे को दूध पिला सकती है। इससे बच्चे को कोई हानि नहीं पहुंचती। ऐसा देखा गया है कि 200 सामान्य गर्भस्थ महिलाओं में से एक को मिर्गी रोग की बीमारी होती है।

मिर्गी रोगी को अपने पास एक पहचान-पत्र रखना चाहिए, जिसमें अपना नाम, पता व बीमारी का नाम तथा दवा का विवरण लिख लें। अपने उपचार करने वाले चिकित्सक का नाम व पता भी लिख दें। रोगी को अपनी बीमारी का रिकॉर्ड रखना चाहिए तथा होने वाली दौरे की तारीख सहित अंकित करना चाहिए।

अपने डॉक्टर के साथ इन बातों की चर्चा करें

अपने इवेंट कैलेंडर में दौरों की जानकारी रिकॉर्ड करने के अलावा आप अपने किसी प्रश्न को भी लिख सकते हैं।

उदाहरण के रूप में :-

1. जिस तरह के दौरे मुझे पड़ते हैं उसके लिए उपचार के कौनसे विकल्प उपलब्ध है?
2. क्या कुछ निश्चित विटामिन या कुछ विशेष तरह का भोजन लेना सहायक है ?
3. आपात स्थिति में मुझे क्या करना चाहिए?
4. मुझे कितनी नींद निकालनी चाहिए?
5. अपनी दवाइयां लेना भूल जाऊं तो?
6. केवल महिला मरीजों के लिए- मैं किस तरह की गर्भनिरोधक गोलियां लूं?

मिर्गी की देखभाल और अति संरक्षण

ज्यादातर भारतीय परिवारों में यह देखा जाता है कि जिस बच्चे या व्यक्ति में अपाहिज या कोई भी गंभीर बीमारी (मिर्गी) होने पर परिवार उसे बहुत ज्यादा अति संरक्षण (ज्यादा ध्यान देना) और सहानुभूति देते हैं। मिर्गी पीड़ित व्यक्ति पर अति संरक्षण रखने में उसमें अपरिपक्वता और गैर जिम्मेदारी होने का अहसास होता है, क्योंकि उसे यह महसूस होता है कि मैं कुछ नहीं कर सकता। इसलिए उन्हें चाहिए कि अपने बच्चों को बराबर प्यार दें। एक जैसी शिक्षा दें, हर क्षेत्र में वह भी ऐसा ही परफॉर्मेन्स कर सकता है। जब बच्चों में पहली बार मिर्गी के दौरे को माता-पिता देखते हैं तो उन्हें मानसिक आघात लगता है कि यह हमारे बच्चे को क्या हो गया है? उसके मन में कुछ नकारात्मक विचार आने लगते हैं - स्वयं निराश न हो और न ही बच्चे में हीनता, निराशा के भाव पनपने दें।

1. क्या मेरा बच्चा अकेला रह पाएगा या नहीं? हमेशा उसके आस-पास किसी को रहना

पड़ेगा? जब बच्चा 10-12 वर्ष का या बड़ा हो जाए उसे स्वयं का काम खुद करने की आदत डालें, समय पर दवा लेना सिखाएं, उसको व्यस्त रखें तथा आत्म विश्वास बढ़ाएं।

2. विद्यालय में शिक्षक उसके साथ कैसा व्यवहार करेंगे? दूसरे सामान्य बच्चों में और मेरे बच्चे में फर्क करेंगे? विद्यालय प्रबंधक व शिक्षक को बच्चे की जानकारी अवश्य दे देवें व अनुरोध करें कि इससे सामान्य व्यवहार करें।
3. रिश्तेदारों को मालूम पड़ेगा तो क्या सोचेंगे?

इन विचारों से माता-पिता के मन में डर बैठ जाता है और वह हताश हो जाते हैं और वह अपने बच्चे के साथ अति संरक्षण का व्यवहार करने लगते हैं। माता-पिता को चाहिए कि वह अपने बच्चे के साथ या फिर जिस भी व्यक्ति में बीमारी की जांच करने के पहले जैसा सामान्य व्यवहार करते थे वैसा ही करें। ज्यादा अति संरक्षण व्यवहार उसके भविष्य के लिए अच्छा नहीं है।

माता-पिता को कुछ मुख्य बातों का ध्यान रखना चाहिए जो इस प्रकार है

1. मिर्गी की बीमारी के बारे में पूरे परिवार के साथ चर्चा करें, उस मरीज को बीमारी के बारे में अच्छे से जानकारी दें। जिससे वह अपने आप में शर्म महसूस न करें।
2. अपने बच्चे का मनोबल बढ़ाएं, उसे प्रोत्साहित करें।
3. विद्यालय में जाकर उसके शिक्षक से बात कर इस बीमारी की सही जानकारी दें और सहयोग करने के लिए निवेदन करें।
4. मरीज को उम्र के साथ उसकी जिम्मेदारी का एहसास कराएं और उसे हर कार्य क्षेत्र में आगे आने में प्रेरित करें।

सार यह है कि हमें बीमारी से लड़ने की क्षमता होनी चाहिए। किसी भी चीज की अति अच्छी नहीं होती है। हर बीमारी का इलाज है। लाइलाज नहीं है। बस जरूरत है थोड़े से धैर्य और हिम्मत की।

✿✿✿

मिर्गी के लक्षण : निम्न मिर्गी के लक्षण देखकर पेज नं. 19/20 पर लिखें।

1.	ऊर्जा की कमी
2.	अस्थिरता
3.	दृष्टि में दोहराव
4.	बात करने में तकलीफ
5.	चक्कर आना
6.	सिर दर्द
7.	एकाग्रता में कठिनाई
8.	याद करने में मुश्किल या भूलक्कड़पन
9.	चिड़चिढ़ापन या मूड में बदलाव
10.	मतली/उल्टी
11.	चकते
12.	अधिक नींद आना
13.	शैकिंग
14.	मसूड़ों में सूजन
15.	वजन बढ़ना या घटना
16.	कोई अन्य
17.	

मिर्गी के प्रकार के आधार पर लक्षण भी भिन्न हो सकते हैं

जैसे- कुछ देर के लिए आंखों के सामने अंधेरा छा जाना और बाद में उलझन महसूस करना। मुंह से झाग या लार आना, घुरघुराना या खर्राटे लेना। अस्थाई रूप से सांसों का रुकना, शरीर के अंगों में झटके के साथ मरोड़ आना।

मिर्गी दौरे संबंधी कलेण्डर

दौरे आने का विवरण			लक्षण (पेज 18 देखकर) लिखें, दवा के साईड इफैक्ट, अन्य तकलीफ का विवरण
तारीख	समय	अवधि	

मिर्गी दौरे संबंधी कलेण्डर

दौरे आने का विवरण			लक्षण (पेज 18 देखकर) लिखें, दवा के साईड इफैक्ट, अन्य तकलीफ का विवरण
तारीख	समय	अवधि	

यह पेज डॉक्टर सा. द्वारा भरा जायेगा

नोट : कृपया 1 दवाई का नाम 1 लाईन में ही लिखें जिससे डायरी लम्बे समय तक काम आ सके।

दिनांक	दवाई का विवरण	मात्रा			अवधि	अगली बार दिखाने की तारीख
		सुबह	दोपहर	शाम		

यह पेज डॉक्टर सा. द्वारा भरा जायेगा

नोट : कृपया 1 दवाई का नाम 1 लाईन में ही लिखें जिससे डायरी लम्बे समय तक काम आ सके।

दिनांक	दवाई का विवरण	मात्रा			अवधि	अगली बार दिखाने की तारीख
		सुबह	दोपहर	शाम		

यह पेज डॉक्टर सा. द्वारा भरा जायेगा

नोट : कृपया 1 दवाई का नाम 1 लाईन में ही लिखें जिससे डायरी लम्बे समय तक काम आ सके।

दिनांक	दवाई का विवरण	मात्रा			अवधि	अगली बार दिखाने की तारीख
		सुबह	दोपहर	शाम		

यह पेज डॉक्टर सा. द्वारा भरा जायेगा

नोट : कृपया 1 दवाई का नाम 1 लाईन में ही लिखें जिससे डायरी लम्बे समय तक काम आ सके।

दिनांक	दवाई का विवरण	मात्रा			अवधि	अगली बार दिखाने की तारीख
		सुबह	दोपहर	शाम		

यह पेज डॉक्टर सा. द्वारा भरा जायेगा

नोट : कृपया 1 दवाई का नाम 1 लाईन में ही लिखें जिससे डायरी लम्बे समय तक काम आ सके।

दिनांक	दवाई का विवरण	मात्रा			अवधि	अगली बार दिखाने की तारीख
		सुबह	दोपहर	शाम		

यह पेज डॉक्टर सा. द्वारा भरा जायेगा

नोट : कृपया 1 दवाई का नाम 1 लाईन में ही लिखें जिससे डायरी लम्बे समय तक काम आ सके।

दिनांक	दवाई का विवरण	मात्रा			अवधि	अगली बार दिखाने की तारीख
		सुबह	दोपहर	शाम		

यह पेज डॉक्टर सा. द्वारा भरा जायेगा

नोट : कृपया 1 दवाई का नाम 1 लाईन में ही लिखें जिससे डायरी लम्बे समय तक काम आ सके।

दिनांक	दवाई का विवरण	मात्रा			अवधि	अगली बार दिखाने की तारीख
		सुबह	दोपहर	शाम		

यह पेज डॉक्टर सा. द्वारा भरा जायेगा

नोट : कृपया 1 दवाई का नाम 1 लाईन में ही लिखें जिससे डायरी लम्बे समय तक काम आ सके।

दिनांक	दवाई का विवरण	मात्रा			अवधि	अगली बार दिखाने की तारीख
		सुबह	दोपहर	शाम		

यह पेज डॉक्टर सा. द्वारा भरा जायेगा

नोट : कृपया 1 दवाई का नाम 1 लाईन में ही लिखें जिससे डायरी लम्बे समय तक काम आ सके।

दिनांक	दवाई का विवरण	मात्रा			अवधि	अगली बार दिखाने की तारीख
		सुबह	दोपहर	शाम		

यह पेज डॉक्टर सा. द्वारा भरा जायेगा

नोट : कृपया 1 दवाई का नाम 1 लाईन में ही लिखें जिससे डायरी लम्बे समय तक काम आ सके।

दिनांक	दवाई का विवरण	मात्रा			अवधि	अगली बार दिखाने की तारीख
		सुबह	दोपहर	शाम		

दवा वितरण की तारीख

दवा वितरण की तारीख

श्री प्राज्ञ मिरगी रोग निवारक समिति की गतिविधियाँ छायाचित्र की नजर से

मंत्री घेवरचंदजी श्रीश्रीमाल अ.भा. मिर्गी संगठन नई दिल्ली के वार्षिक अधिवेशन मार्च 2019 को सम्बोधित करते हुए।

अखिल भारतीय मिरगी संगठन के अध्यक्ष डॉ. (प्रो.) श्री मन मोहन मेहंदीरत्ता, सेकेटरी जनरल श्रीमती मंजरीजी त्रिपाठी एवं अन्य पदाधिकारियों के साथ मंत्री घेवरचन्द श्रीश्रीमाल मार्च 2019

योगा विशेषज्ञ द्वारा रोगियों को योगाभ्यास कराते हुए।

श्रीमती लीला बहन फार्मासिस्ट दवाई देते हुए।

मासिक केम्प में समिति के सदस्य श्री के.डी. मिश्राजी बाबूलालजी जोशी, सुरेशजी लोढ़ा, रमेशजी बैरवा एवं मदनलालजी लोढ़ा रजिस्ट्रेशन व नई डायरियां बनाते हुए

मासिक केम्प में डॉ. अमित अग्रवाल M.G. Hospital जयपुर मरीजों को देखते हुए।

श्री प्राज्ञ मिरगी रोग निवारक समिति की गतिविधियाँ छायाचित्र की नजर से

स्व. श्रीमान् रणजीतसिंहजी सा. एवं स्व. श्रीमती कंचनदेवजी कोठारी आपकी पुण्य स्मृति में हर वर्ष नवम्बर माह में मिर्गी दिवस मनाया जायेगा।

गुलाबपुरा स्थित परिसर में आयोजित कैम्प में आते रोगी।

अन्तर्राष्ट्रीय मिर्गी दिवस के उपलक्ष में आयोजित मासिक केम्प में डॉ. आर.के. सुरेखा द्वारा मरीजों को उद्बोधन देते हुए

प्राज्ञ मिर्गी निवारक समिति के मासिक केम्प में बगीचे में उपस्थित समिति सदस्य एवं रोगी

श्री प्राज्ञ मिरगी रोग निवारक समिति की गतिविधियाँ छायाचित्र की नजर से

मासिक केम्प में आये हुए मिर्गी रोगी एवं परिजन डॉ. सा. के उद्बोधन को सुनते हुए

डॉ. सतीश जैन, डॉ. आर.के. सुरेखा व डॉ. प्रताप संचेती मिरगी प्रदर्शनी को देखते हुए।

श्री नवीन जैन, मैनेजिंग डायरेक्टर राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, जयपुर द्वारा दि. 27-12-16 को अस्पताल का निरीक्षण करते हुए।

मासिक केम्प में मिर्गी रोगियों के ठीक होने पर अपने अनुभव दूसरे मरीजों को बताते हुए

मासिक केम्प में आये हुए मिर्गी रोगी इस रोग के बारे में जानकारियां सुनते हुए

हॉस्पिटल स्टॉफ कु. टीना साहू द्वारा मरीज की जाँच करते हुए।

श्री प्राज्ञ मिरगी रोग निवारक समिति की गतिविधियाँ छायाचित्र की नजर से

मासिक केम्प में डॉ. गगनदीप न्यूरोफीजिशियन दयानंद मेडिकल कॉलेज, लुधियाना द्वारा मरीजों को संबोधित करते हुए।

प्राज्ञ मिर्गी रोग निवारक समिति के परिसर का बाह्य एवं आन्तरिक दृश्य

मासिक केम्प में योग विशेषज्ञ द्वारा मरीजों को योगा करवाते हुए।

अखिल भारतीय मिर्गी संगठन के वार्षिक अधिवेशन 2015 में भाग लेते हुए एवं घेवरचन्द श्रीश्रीमाल पुरस्कार प्राप्त करते हुए

मासिक केम्प में राष्ट्रीय मिरगी दिवस 2019 के उपलक्ष में स्कूल के बच्चों द्वारा सॉक्षिप्त मिरगी नाटिका का प्रदर्शन करते हुए।

राष्ट्रीय मिरगी दिवस 2019 के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित समाज के विशिष्ट अतिथिगण